भारत सरकार

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1269

दिनांक 09.02.2024 को उत्तर के लिए

वैश्विक भूख सूचकांक

1269. श्री सुब्बारायण के.:

क्या महिला और बाल विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगी कि:

(क) क्या सरकार का ध्यान हाल ही में जारी वैश्विक भूख सूचकांक की ओर आकर्षित हुआ है, जिसमें कम पोषण, बच्चों का बौनापन, बच्चों का दुबलापन और बाल मृत्यु दर जैसे कारकों को ध्यान में रखते हुए भूख की बहुआयामी प्रकृति को दर्शाते हुए 125 देशों में से भारत को 111वां स्थान दिया गया है।

(ख) यदि हां, तो रिपोर्ट में निष्कर्षों का ब्यौरा क्या है; और

(ग) इस पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है?

उत्तर

महिला एवं बाल विकास मंत्री

(श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी)

(क) से (ग) कंसर्न वर्ल्डवाइड और वेल्थुंगरहिल्फे द्वारा जारी ग्लोबल हंगर इंडेक्स (जीएचआई) 2023 के अनुसार, भारत 28.7 स्कोर के साथ 125 देशों में से 111वें स्थान पर है।

जीएचआई भारत की वास्तविक तस्वीर को प्रतिबिंबित नहीं करता है क्योंकि यह 'भूख' का एक त्रुटिपूर्ण माप है। इसे अंकित मूल्य पर नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि यह न तो उचित है और न ही किसी देश में व्याप्त भूख का प्रतिनिधित्व करता है। इसके चार संकेतकों में से केवल एक संकेतक, यानी अल्पपोषण, सीधे तौर पर भूख से संबंधित है। दो संकेतक, अर्थात् बौनापन और दुबलापन, भूख के अलावा स्वच्छता, आनुवंशिकी, पर्यावरण और भोजन सेवन के उपयोग जैसे विभिन्न अन्य कारकों की जटिल इंटरैक्शन के परिणाम हैं, जिन्हें जीएचआई में बौनापन और दुबलापन के लिए प्रेरक/परिणाम कारक के रूप में लिया जाता है। इसके अलावा, इस बात का शायद ही कोई सबूत है कि चौथा संकेतक, अर्थात् बाल मृत्यु दर भूख का परिणाम है।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) के तहत देश में पोषण संबंधी संकेतकों पर समय-समय पर आंकड़ा एकत्र किया जाता है। हालिया एनएफएचएस-5 (2019-21) रिपोर्ट के अनुसार, एनएफएचएस-4 (2015-16) की तुलना में 5 साल से कम उम्र के बच्चों के पोषण संकेतकों में सुधार हुआ है। बौनापन 38.4% (2015-16) से घटकर 35.5% (2019-21) हो गया है, दुबलापन 21.0% (2015-16) से घटकर 19.3% (2019-21) हो गया है और कम वजन का प्रचलन 35.8% (2015-16) से घटकर 32.1%(2019-21) हो गया है।

इसके अलावा, दिसंबर 2023 के पोषण ट्रैकर के आंकड़ों के अनुसार, 6 साल से कम उम्र के लगभग 7.44 करोड़ बच्चों को मापा गया, जिनमें से 36% बौने पाए गए और 17% कम वजन वाले पाए गए और 6% बच्चे 5 साल से कम उम्र के पाए गए। वर्ष बर्बाद होते पाए गए। कम वज़न और कमज़ोरी का स्तर एनएफएचएस 5 के अनुमान से बहुत कम है।

सरकार ने कुपोषण के मुद्दे को उच्च प्राथमिकता दी है और इस मुद्दे के समाधान के लिए गंभीर प्रयास कर रही है। आंगनवाड़ी सेवाओं और पोषण अभियान के तहत पूरक पोषण कार्यक्रम के तहत प्रयासों को पुनर्जीवित किया गया है और इसे 'सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0' (मिशन पोषण 2.0) के रूप में परिवर्तित किया गया है। इसका उद्देश्य पोषण सामग्री और वितरण में रणनीतिक बदलाव के माध्यम से बच्चों, किशोरियों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं में कुपोषण की चुनौतियों का समाधान करना और स्वास्थ्य, कल्याण और प्रतिरक्षा का पोषण करने वाली प्रथाओं को विकसित करने और बढ़ावा देने के लिए एक अभिसरण पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है।

पोषण 2.0 मातृ पोषण, शिशु और छोटे बच्चे के आहार मानदंड, एमएएम/एसएएम के उपचार और आयुष के माध्यम से कल्याण पर केंद्रित है। यह अभिसरण, शासन और क्षमता-निर्माण के स्तंभों पर आधारित है। पोषण अभियान आउटरीच के लिए प्रमुख स्तंभ है और पोषण संबंधी सहायता, आईसीटी हस्तक्षेप, मीडिया एडवोकेसी और अनुसंधान, सामुदायिक आउटरीच और जन आंदोलन से संबंधित नवाचारों को कवर करता है। सेवाओं के त्वरित पर्यवेक्षण और प्रबंधन के लिए पूरक पोषण के प्रावधानों की वास्तविक समय की निगरानी के संबंध में शासन में सुधार के लिए एक मजबूत आईसीटी सक्षम मंच 'पोषण ट्रैकर' के तहत मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में पोषण की गुणवत्ता और परीक्षण में सुधार, प्रदायगी और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने को मजबूत करने के लिए कदम उठाए गए हैं।

सरकार ने पोषण सहायता कार्यक्रम और सेवा प्रदायगी में अधिक पारदर्शिता, जवाबदेही और गुणवत्ता के लिए दिनांक 13.1.2021 को सुव्यवस्थित दिशानिर्देश जारी किए। ये दिशानिर्देश पूरक पोषण की गुणवत्ता सुनिश्चित करने, कर्तव्य धारकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को उजागर करने, आईटी सक्षम डेटा प्रबंधन और निगरानी, आयुष के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान का लाभ उठाने, अच्छे पोषण परिणाम प्राप्त करने के लिए खरीद और अभिसरण पर जोर देते हैं।

*****